Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य और उज्जैयिनी सामंत राव वेताल भट्ट का परिचय

मंगल सिंह बुटड़ेसा* डॉ.हेमेन्द्र सिंह सारंग देवोत**

* छात्र,एम.ए.(उत्तरार्ध) (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय,गंगरार,चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
** सह-आचार्य (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय,गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारत का इतिहास बहुत ही गौरव शाली रहा है। परमार (पंवार) राजवंश के महान पुरूष चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य और उनके प्रमुख सामंत राव वेताल भट्ट का इतिहास बहुत कम ही उपलब्ध हो पाता है।

सम्राट विक्रमादित्य का पराक्रम, शौर्य व दानवीरता अद्भुत थी। इन्हें पूरे भारत वर्ष में न्याय सम्राट के रूप में जाना जाता है। कुछ इतिहासकारों ने विक्रमादित्य को काल्पनिक बताने की चेष्टा की और वेताल भट्ट को कहानियों से जोड़ कर कल्पना मात्र बता दिया जबकि विक्रम – वेताल कथाओं पर आधारित वेताल पच्चीसी के रचियता वेताल भट्ट को माना गया है। विक्रमादित्य के प्रमुख सामंत वेताल भट्ट एक योद्धा थे जिनकी हर युद्ध में अभियान में विक्रमादित्य के साथ महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी और महाराज विक्रमादित्य की सभा में नौ रत्नों में वेताल जी को प्रमुख स्थान प्राप्त था।

विक्रमादित्य के अनेक किस्से व कहानियाँ पुराणों से लेकर लोक साहित्य में असंख्य रूप से उपलब्ध है। सम्राट विक्रमादित्य का शासन काल भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग का परिचय देता है। अपने शासन काल में विक्रमादित्य ने अनेक तीर्थों एवं प्राचीन मंदिरों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार करवाया था। प्राचीन नगरी अयोध्या को खोजने और पुन: अयोध्या नगरी को बसाने का श्रेय भी महाराज विक्रमादित्य को ही जाता है। सन 1767 ईस्वी में भारत की यात्रा करने वाले आस्ट्रियां के जेसुइट पादरी टाईफिनथेलर ने 1785 ईस्वी में फ्रेंच भाषा में प्रकाशित अपनी पुस्तक में सम्राट विक्रमादित्य द्वारा अयोध्या को पुन: बसाने और श्रीराम जन्मभूमि के मन्दिर निर्माण करवाये जाने का उल्लेख किया है।

विक्रमादित्य की अरब विजय का वर्णन अरबी कवि जरहाम किंतोर्ड ने अपनी पुस्तक शायर उर ओकुल में किया है। इसी पुस्तक में विक्रमादित्य से संबंधित एक शिलालेख का उल्लेख है, जिसमें कहा गया है कि वे लोग भाग्यशाली हैं जिन्होंने उस समय जन्म लिया और राजा विक्रम के शासन में जीवन व्यतीत किया। पुराणों और अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों के अनुसार पता चलता है कि अरब और मिस्र विक्रमादित्य के अधीन थे।

महाराजा विक्रमादित्य के शासन में भारत सोने की चिड़िया कहलाता था। प्रजा उनके शासन काल में बहुत ही सुखी थी। महाराजा अपनी प्रजा के प्रति अत्यंत दयालु तथा उदारशील थे। महाराजा ने विक्रम सम्वत का प्रारम्भ नेपाल से ही किया था इसलिये नेपाल में आज भी विक्रम सम्वंत को माना जाता है। विक्रमादित्य हरसिद्धि माता के परम भक्त थे। वही सामंत राव वेताल भट्ट भी कई बार हर सिद्धि माता की पूजा में लीन रहते थे। उनकी अखंड भक्ति से माता का आशीर्वाद हमेशा उन पर रहता था।

महाराजा विक्रमादित्य ने हमेशा हिन्दू धर्म की रक्षा की। सनातन धर्म उन्हीं के कारण विश्व में अपनी पताका फैला रहा था। शकों को उज्जैन की धरती से नेस्तनाबूत करने के बाद ही विक्रमादित्य को शकारी की उपमा दी गई थी। उन्हें शकारी भी कहा जाता है। इस उपमा उपरांत विक्रम सम्वत की स्थापना की गई। किवदन्ती है कि भूटान निवासी नागार्जुन उस वक्त उज्जैन विक्रमादित्य के अतिथि बने थे। उनके सहयोग से विक्रमादित्य विक्रम सम्वत स्थापित करने में सक्षम हो पाये थे। अपने दरबार में नवरत्न रखने की परम्परा का शुभारम्भ विक्रमादित्य द्वारा ही किया गया। उन नवरत्नों में राव वेताल भट्ट को प्रमुख सामंतो में स्थान दिया गया जो उज्जैन की सेना का संचालन करते थे। अकबर ने विक्रमादित्य की नकल करते हुए ही अपने यहाँ नवरत्न की परम्परा चलाई।

महाकवि कालिदास ने विक्रमादित्य की सेना का वर्णन अपने ग्रन्थ ज्योतिर्विदाभरण में बताया है। उनकी सेना में 3 करोड़ पैदल सैनिक, 10 लाख वाहन, 1,62,000 हाथी और 4 लाख नौका थी। इतनी विशाल सेना और सामंत वेताल भट्ट हर युद्ध अभियान में उनके साथ ही रहते थे। विक्रमादित्य एक अजेय योद्धा थे जिन्होंने अपनी विशाल सेना के दम पर विश्व में विजय पताका फहराई।

राव वेताल भट्ट महाराजा विक्रमादित्य के प्रमुख सामंत और परम मित्र थे। इन्हीं वेताल जी के वंशज 400–500 वर्षों तक परमार राजवंश से जुड़े रहे फिर इन्होंने राजस्थान के मेवाड़ अंचल की ओर प्रस्थान किया और मेवाड़ राजवंश से कई जागीरिया युद्ध भूमि में बलिदान और अच्छे कार्यों के एवज में प्राप्त की। यहाँ पर बूटरेचा गौत्र के राव सिरदार से पहचाने गए।

राव वेताल भट्ट को कहीं ब्राह्मण तों कहीं कवि से परिभाषित किया गया जबकि विक्रमादित्य के दरबार में वेताल जी प्रमुख सामंत थे। महाकवि का पद कालिदास के पास था। वेताल जी को भट्ट शब्द एक उपाधि के रूप में प्राप्त हुआ था जिसे भ्रम वश पंडित से जोड़ दिया गया। वास्तव में वेताल जी के वंशज आज भी मेवाड़ में कई जागिरियो पर निवासरत है, जिनकी मूल गौत्र विलास है।

परमार पंवार राजवंश रत्नमाला में भी स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि वेताल भट्ट युद्ध कौशल के महारथी थे और हमेशा विक्रमादित्य के साथ ही रहते थे।

बात उस वक्त कि है जब हुणों का चीन पर कोई बल नहीं चला तो उन्होंने पश्चिम की ओर बढ़ना प्रारंभ किया। हुण जाति अत्यंत कट्टर, असभ्य और लूटमार करने वाली थी। हुणों ने यूची नामक कबीलाई जाति के लोगों को खत्म करना प्रारंभ कर दिया। यूची नामक कबीलाई जाति के लोग हुणों

से डरकर मैदानों की ओर भागे, जहां पर शीर नदी घाटी में (मध्य एशिया) शकों का शासन था। यूची जाति के लोगों ने यहां शकों पर ताबड़तोड़ हमला बोला और उनके राज्य को अपने कब्जे में ले लिया। यहां से शकों की एक शाखा ने बैक्टीरिया (यवन इलाका) देश पर आक्रमण कर उसे अपने कब्जे में ले लिया और शकों की वही शाखा भारत में प्रवेश कर गई। उस वक्त शकों का कट्टर राजा मोअस था। इसी मोअस ने अपनी अत्यंत विनाशक सेना के साथ उज्जैन पर भयंकर आक्रमण किया।

उस वक्त उज्जैन के राजा गंधर्वसेन (गर्दभील्ल) थे। शकों के अत्याचार से पूरी पृथ्वी त्रस्त थी। शक बहुत ही खूंखार और अत्याचारी थे। उनके आक्रमण से भारत के इतिहास पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। विदेशों से आकर इन्होंने पूरे भारत में अपना राज्य विस्तार किया। शकों ने मालवा क्षेत्र पर भयंकर आक्रमण किया और गंधर्व सेन को - हराकर पूरे क्षेत्र पर अपना अधिकार जमा लिया। यहीं से इन्होंने शक सम्वंत प्रारम्भ किया।

शकों की पराजय और विक्रमादित्य का राज्यारोहण - उस वक्त विक्रमादित्य बाल्यावस्था में थे और गंधर्वसेन को परिवार सहित जंगलों में निवास करना पड़ा। शायद ऐसा रहा होगा कि गंधर्वसेन का उन जंगलों में ही देहावसान हो गया हो किंतु यह बात बिल्कुल तर्कपूर्ण नहीं लगती क्योंकि गंधर्व सेन की समाधि (छतरी) आहड़ के गंगोद्भव कुंड में होना यह सत्यापित करता है कि मालवा क्षेत्र छीन जाने के बाद गंधर्वसेन अकेले ही जंगलों (वर्तमान मेवाड़) की ओर पलायन कर गए। उनकी गंगोदभव (गंगू कुंड) में समाधि होना प्रत्यक्ष दर्शाता है कि उनकी मृत्यु यहीं पर हुई थी। उस समय भ्रतहरि और विक्रमादित्य को मालवा के जंगलो में ही निवास स्थान बनाना पड़ा। विक्रमादित्य को अहसास था कि वो एक राजपुत्र है और उन्हें पुन: उज्जैन (अवंतिका) नगरी को प्राप्त करना है। यही सोच कर जंगलों में जीवन व्यतीत कर रहे थे। उस वक्त पाटनगढ़ (वर्तमान नाम) पर भीमसेण का अधिकार था। बड़वा पोथी में उल्लेख मिलता है कि भीमसेण पाताल लोक गए और नागराज पिंगल नामक ग्रंथ बनाया। भीमसेण के पुत्र वेताल का जन्म पाताल लोक में हुआ। भीमसेण पृथ्वी पर आए और पाटनगढ़ बसाया। भीमसेण पाटनगढ़ पर अपना राज काज संभाल रहे थे। भीमसेण के पुत्र वेताल भट्ट ने किसी कारण वश अपने पिता को छोड़ कर उज्जैन की ओर प्रस्थान किया। जंगलों से गुजरते समय में उनका महाराजा विक्रमादित्य से मिलना हुआ। उस वक्त दोनों युवा अवस्था में थे और उनमें घनिष्ठ मित्रता हो गई।

इतिहास की दृष्टि से देखा जाय तो विक्रमादित्य के परम मित्र में भट्ट नाम आता है। दोनों हम उम्र भी थे। सम्राट विक्रमादित्य को मालूम था कि वो मालवा देश के राजा के पुत्र है किन्तु आज उनके पास सैनिक के नाम पर केवल मित्र वेताल भट्ट है। भविष्य पुराण में उल्लेख मिलता है कि शिव पार्वती ने अपने सेवक वेताल को विक्रमादित्य के रक्षार्थ भेजा था इससे यह अनुमान लगता है कि पाताल लोक (नाग लोक) में ही वेताल जी को शिव पार्वती से उज्जैन जाने का आशीर्वाद मिल गया होगा। यहीं से दोनों ने अभियान प्रारम्भ किया। जंगलों में लोगों को इकट्ठा कर सैनिक तैयार करना प्रारम्भकर दिया जिसकी शकों को कानों- कान खबर नहीं थी। दोनों ने कुछ ही समय में एक विशाल सेना स्थापित कर दी, जिसका नाम भैरव सेना रखा गया। यह सेना इतनी शक्तिशाली थी कि युद्ध के अन्तिम परिणाम में जीत ही चाहती थी।

महाराजा विक्रमादित्य ने शकों को पराजित करने की रणनीति और सेना का संचालन मित्र वेताल भट्ट को सौंप दिया। इसमें विक्रमादित्य का धन्वंतरि, क्षपणक, अमर सिंह, शंकु, घटर्खपर, कालिदास, वराहमिहिर, वरूचि ने साथ दिया। इन्हें बाद में विक्रमादित्य ने अपने दरबार में 9 रत्नों में स्थान दिया था। विक्रमादित्य एवं वेताल भट्ट ने विचार विमर्श कर तय किया कि उज्जैन नगरी को पुन: हासिल करनी है। विक्रमादित्य के आदेश पर वेताल ने युद्ध से पहले ऐलान कर दिया की कि धावा इतना भयानक होना चाहिए कि दुश्मनों की रूह काँप उठे।

विक्रम और वेताल घोड़े पर सवार हो एक साथ खड़े थे और पीछे पूरी सेना। शकों को कानों - कान खबर ना लगी और एक तूफान की तरह आक्रमण हुआ। विक्रम और वेताल की तलवार ने शकों को कुछ ही घंटो में तहस-नहस कर दिया। खूंखार शक भाग खड़े हुए। विक्रमादित्य ने मालवा देश को कब्जे में लेकर उज्जैन नगरी को पुन: स्थापित कर दिया।

उस वक्त भ्रतहरि को उज्जैन का राजा बनाया गया और वेताल जी उनके प्रमुख मंत्रियों में रहे। उसके बाद विक्रमादित्य ने सीमा विस्तार के लिए उज्जैन से बाहर की ओर प्रस्थान किया। उज्जैन का शासन राजा भ्रतहरि और उनके मंत्री वेताल जी द्वारा चलाया जा रहा था। राजा भ्रतहरि ने कुछ ही समय बाद राजपाठ त्याग कर संन्यास ले - लिया। उसका मुख्य कारण अधिकांश लोक कथाओं में उनकी रानी पिंगला को माना जाता है। जब भ्रतहरि ने राजपाठ त्याग दिया तब विक्रमादित्य कई वर्षो के लिए सीमा विस्तार करने हेतु अभियान पर गए हुए थे। राजा भ्रतहरि ने वेताल जी को कहा कि जब तक विक्रम उज्जैन वापस नहीं आ जाते तब तक उज्जैन का शासन आप संभालें - रखना। विक्रम के आते ही उन्हें शासन सौंप देना। वेताल जी उज्जैन का शासन पूर्ण जिम्मेदारी से चला रहे थे।

कुछ वर्षो बाद विक्रमादित्य ने कई युद्ध जीत कर पुन: उज्जैन में प्रवेश किया। बेताल जी ने उज्जैन के द्वार पर राजा के लिए पूर्ण स्वागत की तैयारी की और विक्रमादित्य का राजतिलक कर उज्जैन के सिंहासन पर बिराजमान कराया। उस दिन से चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य की विजय पताका सब जगह फैलने लगी। फिर वेताल जी ने विक्रमादित्य से इजाजत मांगी कि महाराज मेरा कार्य पूरा हुआ अब मुझे जाने की इजाजत देवें। विक्रमादित्य ने कहा कि आज मेरे भाई भ्रतहरि ने संन्यास ले लिया है। मैं अब अकेला हूं। इसलिए आज से मैं आपको अपना भाई मानता हूं। अब आपको मेरे साथ ही रहना होगा। विक्रमादित्य ने वेताल भट्ट की भक्ति -शक्ति और मित्रता देखकर उन्हें अपना प्रमुख सामंत बनाया। नौ रत्नों में वेताल भट्ट को स्थान दिया। सीमा सुरक्षा और अवंतिका की पूरी सेना संचालन की पूर्ण जिम्मेदारी वेताल जी को सौंप दी गई। राव सिरदारों की बड़वा पोथी (बड़वा जी स्व. दिनेश जी चण्डीसा) के अनुसार विक्रमादित्य ने वेताल भट्ट को धारनगरी पर राज, एक हजार सैनिक, नौकर - चाकर, हाथी - घोड़े सौंप दिए। परमार (पँवार) राजवंश रत्नमाला (पृष्ठ संख्या 514 बड़वा जी शामलाजी करसन जी अनुसार) में जिक्र मिलता है कि वीर विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न थे और विक्रम जैसे वीर को रिझाने के लिए कीर्ति प्रधान वेताल दरबार में आए और राजा विक्रम से 93 तुलास्वर्ण मुद्राएं, 50 हाथी, 10000 अश्व पुरस्कार के रूप में प्राप्त किए। धार नगरी का अस्तित्व मुख्य रूप से राजा भोज के समय मिलता है जिन्होंने इस नगरी को भव्य बनाया। धार नगरी का अस्तित्व महाराज विक्रमादित्य से पहले भी था जहाँ कोई धारगिरी नामक राजा राज करते थे। बाद में विक्रमादित्य ने ही वेताल भट्ट को धार नगरी का राज सौंपा था। उस वक्त उज्जैन की राजधानी धार नगरी रही, जहाँ से सीमा सुरक्षा का कार्य संभाला जाता था।

वेताल भट्ट आग्नेय एवं विधुत यंत्रों के अच्छे जानकर थे। समय समय पर विक्रमादित्य को युद्ध एवं राक्षसों–दानवों से लड़ने में सहयोग करते थे। सम्राट विक्रमादित्य भी इतने शक्तिशाली और अवतारी थे कि उन्हें स्वयं अवतारी पुरूष माना जाता था। स्वयं इंद्र भगवान भी उनकी सहायता में तैयार रहते थे।

रोम पर आक्रमण और जुलियस सीजर – वेताल भट्ट की हर युद्ध में महाराजा विक्रमादित्य के साथ सहभागिता रहती थी और विक्रमादित्य हर युद्ध रणनीति में किसी भी अभियान में वेताल जी को हमेशा साथ रखते थे।

रोम का शासक जुलियस सीजर विक्रमादित्य का समकालीन था। रोम और विदेशों में सीजर को बहुत ही बढ़ा चढ़ाकर बताया जाता है। उसकी बहादुरी के किस्से सुनाए जाते हैं। रोमन इतिहासकारों ने अपनी नाकामी को छुपाने के लिए यह प्रचारित किया कि जूलियस छह माह अज्ञातवास में था जबकि उस समय विक्रमादित्य रोम के शासक जूलियस सीजर से युद्ध के लिए सीरिया तक गए थे । उस अभियान में बहुत बड़ी रणनीति तय हुई थी । विक्रमादित्य और जूलियस सीजर के बीच महासंग्राम हुआ था । इस महासंग्राम में वेताल जी उनके साथ गए थे। रोम के शासक जूलियस सीजर को विक्रमादित्य ने हरा दिया। विक्रमादित्य उसे बन्दी बना कर उज्जैन लेकर आये। विक्रमादित्य ने जूलियस सीजर को उज्जैन नगरी में खूब घसीटा एवं कई महीनों तक उज्जैन में वेताल भट्ट की निगरानी में बन्दी बना कर रखा। इसे बाद में छोड़ दिया गया।

महाराजा विक्रमादित्य और वेताल भट्ट ने आक्रमणकारियों को भारत की धरती से खदेड़ दिया था। उज्जैन की सेना इतनी विशाल थी कि महाराजा विक्रमादित्य के आदेश पर दुश्मन पर टूट पड़ती थी। विक्रमादित्य की विजय पताका पूरे विश्व में फैलने लगी थी। वेताल भट्ट महाराजा विक्रम के आदेश पर दुश्मन को गाजर मूली की तरह काटने के लिए तत्पर रहते थे। इतना नर संहार उनके द्वारा हो चुका था कि अब वेताल जी को पश्चाताप होने लगा था।

जिस तरह कलिंग युद्ध में सम्राट अशोक ने भीषण नरसंहार देखने के बाद बौद्ध धर्म को अपना लिया था। उसी प्रकार वेताल भट्ट जी को भी जब यह अहसास हुआ कि अवंतिका की सीमाओं को सुदूर विदेशों तक फैलाने में अथाह नरसंहार हुआ। इसका पूर्ण जिम्मेदार वेताल जी ने उज्जैन के सेनापति होने के नाते स्वयं को मान लिया। उन्होंने तुरंत ही निश्चय कर लिया कि अब इस दुनिया के वैभव को त्यागना उचित होगा उन्होंने राजा भ्रतहरि के पद चिन्हों पर चलते हुए राजसी वस्त्र–शस्त्र सभी का त्याग कर भगवा वस्त्र धारण कर जंगल की ओर प्रस्थान किया। वेताल जी ने गुरू गोरखनाथ की घोर तपस्या की। उनके चरणों में स्वयं को समर्पित कर दिया। वेताल जी ने फिर कभी उस अजेय नगरी अवंतिका की ओर मुँह नहीं किया। अपना जीवन नाथ पंथ में समर्पित कर दिया और योगी बन गए।

या रुकम देशाधिपति संकेश्वरं, जित्वा ग्रहित्वोज्जयिनी महादेव आनीय
सम्भ्राम्य मुमोच युवहों स विक्रममार्क: समसहविक्रम !!17!!
– ज्योतिर्विद्या भरण 22.13

अर्थात जिसने रक्म देश (रोम) के शक अधिपति (सीजर) को महासंग्राम में पराजित कर बंदी बनाया तथा उज्जैन लाकर घुमाया फिर बाद में छोड़ दिया ऐसा पराक्रमी विक्रम के अतिरिक्त अन्य कौन हो सकता है।

विक्रम – वेताल और नौलखा हार प्रसंग – राव वेताल भट्ट को एक बार जंगल में जाकर तपस्या करने की इच्छा जाग्रत हुई। वो महाराज से आज्ञा लेकर जंगल की ओर प्रस्थान कर गए। काफी समय बाद बेताल जी का पुन: अवंतिका में आगमन हुआ । महाराजा को समाचार प्राप्त हुए कि वेताल जी पधार रहे है तो उन्होंने वेताल जी के स्वागत की तैयारियां करवाई। उनका स्वागत कर दरबार में आसन ग्रहण करवाया। (ठा. भगवत सिंह जी भटवाड़ा रिटायर्ड पर्यटन विभाग (आर. टी. डी. सी.) से साक्षात्कार और बड़वा स्व. शंभूसिंह जी की पोथी के अनुसार)

कुछ समय बाद वेताल जी ने प्रस्थान की आज्ञा ली तो विक्रमादित्य ने विदा होते समय वेताल जी को नौलखा रत्नजड़ित हार उपहार दिया। वेताल जी उपहार लेकर विदा हुए। जाते समय मार्ग में उन्होंने देखा कि एक वेश्या के घर के बाहर लिखा था कि भवन के बाहर एक नौबत है जिसका अगर कोई एक डंका बजायेगा तो प्रति डंका एक लाख कर लगेगा। वेताल जी ने सोचा इस डंके में ऐसी क्या बात है, उन्होंने अंदर जाकर 9 डंके लगा दिए। डंके की आवाज सुनकर लाखापातर नाम की वेश्या बाहर आयी और नमस्कार कर कहा कि आप तो कोई महान पुरूष या राजा की तरह लगते हो। मैं आपको महल में आने का निमंत्रण देती हूं। वेताल जी ने अंदर जाने से मना कर दिया और नौलखा हार लाखापातर को देकर विदा हो गए। वेताल जी के साथ उनका सेवक पुरोहित खड़ा–खड़ा देख रहा था। उसने सारा वृत्तांत महाराजा विक्रमादित्य को कह सुनाया। विक्रमादित्य ने कहा बात झूठ निकली तो तुम्हें फांसी की सजा होगी।

सुबह के वक्त वेताल जी हरसिद्धि माता के मंदिर में ध्यान में बैठे थे। विक्रमादित्य ने अपने चार राजदूतों को कहा कि वेताल जी को ससम्मान दरबार में आने का निमंत्रण देकर आओ। निमंत्रण मिलने पर वेताल जी ने तुरंत मंदिर से दरबार की ओर प्रस्थान किया। विक्रमादित्य ने वेताल जी के आने पर उनका अभिवादन किया और तुरंत ही कह दिया कि मैं हार देखना चाहता हूँ। वेताल जी ने कहा कि वो तो मैं भेंट स्वरूप नगर की वेश्या को दे आया। राजा को संदेह हुआ कि इसमें कुछ तो रहस्य जरूर है। उन्होंने हार वेताल जी से वापस मांग लिया। इस पर वेताल जी को बहुत पश्चाताप हुआ। उन्होंने कहा कि राजन यह तो नीति के विरूद्ध है। फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा।

वेताल जी ने तुरंत इंद्र भगवान का ध्यान लगाया तो इंद्र भगवान सुर लोक से मृत्यु लोक में आये. वेताल जी ने इंद्र भगवान को एक छपय कहा :–

दया छूट कर गयो – धरम धस गयो धरनी में, गयो पुण्य पाताल – पाप भयो वरनी में। घर– घर होय विपरीत – दु:खी नर अरु नारी, राजा करें न न्याय प्रजा की भई खुमारी, उल्टो भूपति मांगे – शील संतोष कित गया !

वेताल जी ने सारा वृत्तांत इंद्र को कह सुनाया। इंद्र ने अपने गले से नौ करोड़ का हार निकाल कर वेताल जी के सामने रख दिया और वहां से विदा ली। इस बार मेरे पास समय कम है इसलिए मैं विदा लेता हूँ, इतना कह कर इंद्र भगवान सुरलोक की ओर प्रस्थान कर गए। तब राजा विक्रम ने कहा कि मुझे इस बात का पश्चाताप है कि मैंने पुरोहित की बातों में आकर शंका की। तब वेताल जी ने कहा राजन मैं आपको नौलखा हार के बदले नौ करोड़ का हार भेंट करता हूँ। विक्रम ने वो हार पुन: वेताल जी को दे दिया। वेताल जी वहां से विदा हुए। विक्रमादित्य उन्हें हरसिद्धि माता मंदिर तक पहुंचाने गए। वहां पर वेताल जी ने मंदिर के पास बनी वाव (बावड़ी) में वो हार डाल दिया और कहा कि इस हार की मुझे आवश्यकता नहीं है जरूरत होगी तब मांग लूंगा। विक्रमादित्य को आश्चर्य हुआ कि इसमें भी कुछ राज लगता है। उन्होंने हार को पुन: देखने की इच्छा प्रकट की। वेताल जी ने वरूण देव से आह्वान किया तो वरूण देव ने जल से हाथ बाहर निकाल कर हार वेताल भट्ट कों सौंप दिया। राजा विक्रमादित्य ने नमस्कार कर वहाँ से महलों की ओर प्रस्थान किया ।

वेताल मंदिर उज्जैन की एतिहासिकता – संवत प्रवर्तक विक्रमादित्य (लेखक राजशेखर व्यास पेज न.210) में विक्रम के नौ रत्नों की मालिका में वेताल भट्ट का उल्लेख मिलता है। अत्यंत पुरातन: ग्रंथों में कुछ श्लोकों का वेताल भट्ट के नाम से उल्लेख मिलता है। विक्रम की शासन प्राप्ति से वेताल का सम्बन्ध बतलाता है कि कोई प्रचंड व्यक्ति वेताल, विक्रम पूर्व (विक्रम संवत पूर्व) इस अवन्ति में अपना प्रचंड नेतृत्व रखता हो और शासन को अपने नियंत्रण में लिए हो। विक्रम जैसे योग्य व्यक्ति को पाकर उसे शासक बनाने में सहायता की और बाद में विक्रम का सहयोगी, अमात्य आदि रहा हो। वेताल पंचविशती का वेताल केवल कल्पित कथा का पात्र होता तो पेशाची की वृहतकथा से उतरकर 11 वीं शती के कथा सरित्सागर, मेरूतुंग और नवीं शती के स्कन्दपुराण तक कैसे स्थान प्राप्त करता और किसी काल्पनिक कथा–पात्र का सदियों पुराना भव्य मन्दिर आज भी उज्जैन में कैसे है।

इन सब बातों को देखते हुए उज्जैन में स्थित उस स्थान पर भ्रमण किया गया तो वास्तव में ष्आज्ञा वीर वेतालष का मंदिर होना पाया गया। जहाँ पर वेताल भट्ट की मूर्ति स्थापित मिली। इससे यह प्रमाणित होता है कि विक्रमादित्य की आज्ञा से हर अभियान में उनके परम मित्र और सामंत वेताल भट्ट मुख्य रूप से रहे थे। वहां पर मंदिर के पुजारी द्वारा भी बताया गया कि ये स्थान सदियों पुराना हैं। सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी सुनते और पूजा करते आ रहे है। मंदिर के पास ही एक वेताल तलाई थी जो केवल वेताल तलाई के नाम से समतल स्थान ही रह गया है। कुछ दूरी पर ही खण्डहर अवस्था में महलनुमा अवशेष मिले जो बयां करते है कि वेताल जी का निवास स्थान यहाँ रहा होगा। बाद में उस स्थान पर पुन: जीर्णोद्धार होते रहें होंगें। महल की बड़ी दीवार के पीछे घाट बना हुआ है जिसे राजमल घाट पुकारा जाता है। राजाओं की मृत्युपर्यन्त अंतिम क्रिया इसी घाट पर होती थी। घाट पर एक समाधि है जिसके बारे मे पूर्णतया मालूम नहीं किसकी है परन्तु यह भी सत्य है की वेताल जी ने युद्ध वगैरह छोड़ कर अंतिम दौर में सन्यास लेकर नाथ पंथ अपनाया था और राजसी ठाठ बाट छोड़ कर जंगलो की ओर प्रस्थान किया था। समाधि पर पूजा पाठ होती रहती है। यहाँ यह कहना पूर्णतया सत्य होगा की समाधि का कुछ तो सम्बन्ध वेताल भट्ट से रहा होगा या उनकी समाधि होना भी सम्भव है।

वेताल भट्ट का मंदिर आज भी उज्जैन में स्थित है। मन्दिर में वेताल भट्ट की मूर्ति का होना सिद्ध करता है कि विक्रम वेताल एक दूसरे के बिना वास्तव में अधूरे थे। रण क्षेत्र में दोनों मित्र दुश्मनों के परखच्चे उड़ा देते थे। सम्राट विक्रमादित्य को युद्ध काल में वेताल की शक्तियों से सहायता अवश्य मिलती थी।

यदि स्कन्द पुराण और उसके अंतर्गत अवन्ति खंड को 9 वीं शती में विक्रम –वेताल को बहुत प्रसिद्धि एवं लोकप्रियता प्राप्त हो गई थी की यह एक तथ्य वस्तु से सम्बद्ध है और उसका अस्तित्व रहा है। इस प्रसिद्धि से वशीभूत होकर ही वेताल की समाधि ने पुराणों में स्थान प्राप्त किया होगा। यह बात भी प्रख्यात है कि विक्रम का सहायक अथवा मित्र वेताल ही था। शेमंकर ने कथा सरित्सागर में वेताल का नाम अग्निशिखा बतलाया है। जनकथा के आचार्य मेरूतूंग ने अग्नि वर्ण कहा है। इससे यह साबित होता है कि विक्रम के सहायक वेताल भट्ट आग्नेय अस्त्र में पूर्ण पारंगत थे।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. बड़वाजी चंदन जी सुपुत्र दौलत जी (चंडीसा) – बड़वाजी स्व. दिनेश जी सुपुत्र राम सिंह जी (चंडीसा)
2. उज्जैन और उसका गौरवशाली इतिहास (डॉ. राम कुमार अहीर संस्करण 2004)
3. सम्वत् प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य (लेखक राजशेखर व्यास, संस्करण–2019)
4. विक्रमादित्य और सम्वत प्रवर्तक (डॉ. राजबली पाण्डेय)
5. परमार (पंवार) राजवंश रत्नमाला (प्रधान संपादक ठा. नरेन्द्र सिंह पंवार, संस्करण–2019)
6. विक्रम स्मृति ग्रन्थ सम्वत 2001 (संपादक – मेजर जनरल श्रीमंत सर जीवाजी राव महाराज शिंदे ग्वालियर नरेश
7. राजस्थान रा दुहा प्रथम विभाग पेज नम्बर – 85
8. अजर अमर कालजयी महान योद्धा राव वीरानाथ बूटरेचा शोध पत्रिका संस्करण 2022
9. अखंड ज्योति दिसंबर 1969 पेज नंबर–22 (संपादक ब्रह्मवर्चस शांति कुंज हरिद्वार)
10. सम्राट विक्रमादित्य और भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता (डॉ. प्रदीप कुमावत, आलोक संस्थान, उदयपुर)
11. भविष्य–पुराण
12. बाप्पा रावल (डॉ. मोहब्बत सिंह राठौड़ – निदेशक प्रताप शोध प्रतिष्ठान)
13. साक्षात्कार – भगवत सिंह आसेलिया सुपुत्र श्री माधव सिंह ठि. चौबीसा भटवाड़ा (सेवानिवृत R.T.D.C.)
14. जूनी ख्यात (published in & junikhyat journal issn: 2278–4632) माह–मई, वर्ष – 2023, पेज न. – 42–44
15. डूंगरपुर राज्य का इतिहास (गौरीशंकर हीराचन्द ओझा), राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
16. बांसवाड़ा राज्य का इतिहास (गौरीशंकर हीराचन्द ओझा), राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
17. स्वयं द्वारा किया गया सर्वे